

नौकरी की किताब

सत्र 20: एलीहू प्रवचन, अय्यूब 32-37

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 20, एलीहू प्रवचन, अय्यूब 32-37 है।

एलीहू प्रवचन का परिचय (अय्यूब 32-37) [00:24-2:02]

अब हम नवागंतुक एलीहू के पास पहुँचे। पुस्तक के व्याख्याकारों द्वारा उन्हें एक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में देखा गया है, एक ऐसा व्यक्ति जो पुस्तक के प्रवाह में, यदि हो भी तो, मोटे तौर पर फिट बैठता है। लेकिन इस बारे में मेरा दृष्टिकोण अलग है। निश्चित रूप से, उन्हें एक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन मेरा मानना है कि उनकी भूमिका पुस्तक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और पुस्तक के तर्क में योगदान के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यहां तक कि उनका नाम भी दिलचस्प है। अन्य मित्रों के नाम वास्तव में हिब्रू नामों जैसे नहीं लगते। लेकिन एलीहू स्पष्ट रूप से है, और यह अर्थपूर्ण है - "वह मेरा भगवान है।"

याद रखें जब हमने त्रिभुज के बारे में बात की थी? हमने कहा कि एलीहू ने अपना किला परमेश्वर के कोने में बनाया है, और वह परमेश्वर की रक्षा कर रहा है। और इसलिए, उस अर्थ में, एलीहू वास्तव में थियोडिसी का काम कर रहा है, भगवान के न्याय की रक्षा कर रहा है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, एलीहू पुस्तक में किसी भी अन्य मानव वक्ता की तुलना में अधिक सही है, लेकिन वह अभी भी सही नहीं है। वह अभी भी इस लक्ष्य पर नहीं है कि किताब आखिर में हमें कैसे सोचना चाहती है। वह एक तरह से खुद को एक युवा के रूप में प्रस्तुत करता है, कोई ऐसा व्यक्ति जो केवल चुप रहकर और अवलोकन करके अपने बुद्धिमान ऋषि जैसे साथियों का सम्मान करता रहा है। लेकिन अब उसके पास बोलने के लिए इतने शब्द हो गए हैं कि वह उन्हें रोक नहीं पाता।

एलीहू की भूमिका: अय्यूब की आत्म-धार्मिकता को उजागर करना [2:02-2:43]

और इसलिए, आइए 32 से 37 तक एलीहू के प्रवचन की भूमिका पर एक नज़र डालें। एलीहू पुस्तक में एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो अय्यूब के धार्मिक पहलू में एक विशिष्ट उल्लंघन से संबंधित एक विशिष्ट आरोप प्रस्तुत करता है। इसलिए, जहां दोस्त केवल यह सुझाव दे सकते हैं कि अय्यूब ने गलत किया होगा, निःसंदेह, अय्यूब ने पिछले अध्याय में अपनी बेगुनाही की शपथ ली है। एलीहू को एक विशिष्ट आरोप लगाना है, और यह अय्यूब की आत्म-धार्मिकता से संबंधित है।

एलीहू और अय्यूब की बेगुनाही की शपथ [2:43-3:53]

वैसे, इससे पहले कि हम इसमें बहुत आगे बढ़ें, हमें ध्यान देना चाहिए कि अय्यूब की बेगुनाही की शपथ के बाद सस्पेंस बरकरार है। अय्यूब ने अपनी बेगुनाही की शपथ लेकर परमेश्वर के सामने चुनौती पेश की है। और इसलिए, ईश्वर के साथ टकराव एक बहुत ही तीखे संघर्ष की ओर ले जा रहा है, और जब कथावाचक एक और चरित्र का परिचय देता है तो हम सस्पेंस के किनारे पर लटक जाते हैं। किताब में यह वास्तव में एक दिलचस्प तरह की रणनीति है कि जब हम व्यावहारिक रूप से अपनी सांसें रोक रहे होते हैं, यह देखते हुए कि यहोवा कैसे प्रतिक्रिया देगा, हमें एलीहू के भाषण मिलते हैं। और हम कहते हैं, क्या हो रहा है? क्या यह एक विज्ञापन है? तुम्हें पता है क्या हो रहा है। यह विघटनकारी लगता है। फिर, उनमें से कुछ को लगा कि यह वास्तव में विघटनकारी है, लेकिन मुझे लगता है कि यह सब पुस्तक के संकलनकर्ता की रणनीति का हिस्सा है। वह आपको इस बारे में थोड़ा जानने देगा कि क्या परमेश्वर अय्यूब को उत्तर देगा या नहीं। और इसलिए, इस बीच, एलीहू ने अपनी बात रखी।

एलीहू चैलेंजर के समानांतर [3:53-4:47]

पुस्तक के दूसरे भाग में एलीहू की भूमिका, कुछ मायनों में, पुस्तक के पहले भाग में चैलेंजर की भूमिका के समान है क्योंकि वह अय्यूब की धार्मिकता को देखने के लिए एक वैकल्पिक तरीका प्रस्तावित करता है। चैलेंजर ने सुझाव दिया कि अय्यूब की धार्मिकता को केवल समृद्धि के लाभों की खोज के रूप में देखा जा सकता है। एलीहू उस दिशा में नहीं जाने वाला है। वह सुझाव देने जा रहा है कि अय्यूब की धार्मिकता को देखने का वैकल्पिक तरीका आत्म-धार्मिकता है। चुनौती देने वाले ने

अय्यूब के इरादों पर सवाल उठाया, एलीहू वास्तव में अय्यूब की धार्मिकता पर सवाल उठाता है। पुस्तक में ऐसा करने वाला वह एकमात्र व्यक्ति है, जिसमें ईश्वर भी शामिल है।

एलीहू द्वारा प्रतिशोध सिद्धांत को निवारक के रूप में पुनः लागू करना [4:47-6:11]

यद्यपि एलीहू बुराई के आरोप से परमेश्वर का बचाव करता है, आप इसे अध्याय 34 में कई बार पा सकते हैं। वह 36:3 और 37:23 में परमेश्वर के न्याय का बचाव करता है। फिर भी वह प्रतिशोध सिद्धांत के मोटे प्रतिमान को स्वीकार करता है, जो अध्याय 34:11 और 36:11 और 12 है। इसलिए, भगवान पर बुराई का आरोप नहीं है। ईश्वर को न्याय करने वाले के रूप में देखा जाता है। फिर भी प्रतिशोध सिद्धांत सत्य है। अब, याद रखें कि हमने इस बारे में बात की थी कि जब हमने त्रिभुज के बारे में बात की थी तो एलीहू ने ऐसा कैसे किया? वह प्रतिशोध सिद्धांत को फिर से परिभाषित करता है, न कि केवल अतीत में की गई चीजों के लिए उपचारात्मक होना बल्कि आने वाली चीजों की आशंका के लिए निवारक होना। वह अय्यूब के उद्देश्यों के बारे में चुनौती देने वाले से सहमत है, यह 35:3 में है, और उसका प्रमुख मुद्दा यह है कि वह अय्यूब पर आत्म-धार्मिकता के पाप का आरोप लगाता है। वह उस पाप को ही अय्यूब के दुःख का कारण मानता है। आप इसे 34 श्लोक 35 से 37 में पा सकते हैं।

एलीहू ने अय्यूब पर आत्म-धार्मिकता का आरोप लगाया [6:11-8:04]

उनका तर्क यह है कि खुद के बचाव में अय्यूब की आत्म-धार्मिकता इतनी गंभीर है कि उसके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई को उचित ठहराया जा सकता है। एलिहू भिन्नता एक निर्णय है जो अपराध के साथ आगे बढ़ सकता है क्योंकि इसका उद्देश्य आक्रामक व्यवहार को सामने लाना हो सकता है। तो, उस अर्थ में, यह लगभग वैसा ही है जैसे अय्यूब की पीड़ा उसे यह प्रकट करने के लिए उकसा रही होगी कि पर्दे के पीछे वास्तव में क्या चल रहा है। समस्या को प्रकट करने के लिए कष्ट आवश्यक था; एलीहू का जोर धार्मिकता पर है, न कि केवल महान सहजीवन पर, हालांकि वह सवाल करता है कि क्या भगवान को मानवीय धार्मिकता की आवश्यकता है। शायद यह उतना महत्वपूर्ण भी नहीं है।

अय्यूब के आत्मतुष्ट रवैये की निंदा करने में वह बिल्कुल सही है। हम इसे अय्यूब के भाषणों में और ईश्वर की कीमत पर अपनी रक्षा करने की अय्यूब की इच्छा में देख सकते हैं। यह अय्यूब और उसकी सोच की एक वैध आलोचना है। एलीहू उन चीज़ों को बाहर लाता है। लेकिन एलीहू अय्यूब की प्रेरणाओं के बारे में गलत है; एलीहू महान सहजीवन रवैये से घृणा करता है और मानता है कि अय्यूब अभी भी लाभ की इच्छा रखता है। अय्यूब ने भलीभांति प्रदर्शित किया है कि किसी भी कीमत पर समृद्धि उसके जीवन की प्रेरक प्रेरणा नहीं है। तो, इस तरह, एलीहू अय्यूब के बारे में गलत है।

एलीहू द्वारा परमेश्वर के न्याय की रक्षा [8:04-8:41]

एलीहू ईश्वर के बारे में सही है जब वह इस बात पर जोर देता है कि ईश्वर हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है और उसके चरित्र के अन्य सभी पहलुओं के साथ उसका न्याय अपराजेय है। हम भगवान से सवाल नहीं कर सकते; हम भगवान से बेहतर काम नहीं कर सकते। हम उनके शासन पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं करते। ईश्वर आकस्मिक नहीं है, और हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि उसके कार्य हमारे मूल्यांकन या सुधार के अधीन हैं। इन बातों में एलीहू सही है। और फिर, वह ईश्वर के बारे में एक बहुत ही उचित उन्नत दृष्टिकोण देता है।

एलीहू की त्रुटिपूर्ण थियोडिसी [8:41-10:09]

साथ ही, वह भगवान की नीतियों की प्रकृति के बारे में गलत है। उसके पास अपर्याप्त थियोडिसी बनी हुई है, और वह थियोडिसी का प्रयास कर रहा है। उसे इस बात का एहसास नहीं है कि थियोडिसी के प्रयास में, वह उसी गलती का शिकार हो रहा है जिसके लिए वह अय्यूब पर आरोप लगाता है। यानी एलीहू न्याय के आधार पर सामंजस्य लाने की अपनी क्षमता को ज़्यादा आंक रहा है। एलीहू अभी भी त्रिकोण पर काम कर रहा है। वह इसे अपने उपयोग के लिए नया आकार देने की कोशिश करता है, लेकिन वह अभी भी त्रिकोण पर काम कर रहा है। वह अब भी सोचता है कि न्याय व्यवस्था की नींव है। वह अभी भी थियोडिसी में लगे हुए हैं। वह अब भी सोचता है कि सुसंगतता न्याय से आती है, और वह अब भी सोचता है कि वह एक सरल समीकरण बना सकता है। यह अय्यूब और उसके दोस्तों द्वारा उपयोग किए जा रहे समीकरण से थोड़ा अधिक जटिल है

क्योंकि यह प्रतिशोध सिद्धांत को फिर से परिभाषित करता है, लेकिन यह अभी भी इस विचार को व्यक्त करता है कि एक सरल न्याय समीकरण सुसंगतता ला सकता है। उस पर, वह गलत है। और उन चीज़ों पर हमारे दृष्टिकोण को समायोजित करने के लिए यहोवा के भाषणों की आवश्यकता होगी।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 20 है, एलीहू का प्रवचन, अय्यूब 32-37। [10:09]